50

पंचदेव

जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-27-0

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 50
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

डॉक्टर हेमन्त

सभ दिन चारि बजे भोरे उठैबला डॉक्टर हेमन्त आइ छह बजे भिनसरमे उठला। अबेरे कऽ नीन टुटलैन। एना किए भेलैन? एना ऐ दुआरे भेलैन जे आन दिन परिवारसँ लऽ कऽ अस्पताल धरिक चिन्ता दबने रहै छेलैन, तँए कहियो भरि-भरि राति जगले रहि जाथि तँ कहियो-कहियो लगले-लगले निन्न टुटि जाइन। कोनो-कोनो राति अनहोनी-अनहोनी सपना देख चहा-चहा कऽ उठि जाथि तँ कोनो-कोनो राति पत्नीसँ झगड़ैत रहि जाइथ।

छह बजे नीन टुटिते हेमन्त घड़ी देखलैन। मुदा अबेरो कऽ निन्न टुटने मनमे एक्को मिसिया चिन्ता नहि। मन फुहराम, एकदम हल्लुक। मनमे जेना चिन्ताक दरस नहि। आन दिन ओछाइनेपर ढेरो चिन्ता घेरि लैन, अनेको समस्या, अनेको उलझन मनकेँ गछारि दैन। केसक की हाल अछि, बेटाकेँ नोकरी हएत की नहि.., क्लिनिकमे कम्पाउण्डरक चलैत रोगी पतरा रहल अछि.., चोट्टा सभ दारू पीब-पीब अन्ट-सन्ट करैत रहैए आ पाइयेक भाँजमे पड़ल रहैए.., जइसँ मुँह-दुबर रोगी सबहक कुभेला होइ छइ। तैसंग अस्पतालोसँ बेर-बेर सूचना भेटैए जे ड्यूटीमे लापरवाही करै छिऐ। बातो सत्य छै मुदा की करब? केस छोड़ि देब तँ पिताक अरजल सम्पैत बहि जाएत। क्लिनिकमे कम्पाउण्डर सभकेँ जँ किछु

कहबै तँ क्लिनिके बन्न भऽ जाएत। जइसँ जेहो आमदनी अछि सेहो चलि जाएत। पुरान कम्पाउण्डर सभ अछि। सभ दिन छोट भाए जकाँ मानैत एलिऐ तेकरा किछु कहबै सेहो उचित नहि। मुदा हमहींटा तँ डॉक्टर नइ छी, बहुतो छैथ। रोगीकेँ की, जैठाम नीक सुविधा हेतै तैठाम जाएत।

ओझराएल जिनगी डॉक्टर हेमन्तक, तँए सोझ-साझ विचार मनमे अबिते ने रहैन। मुदा आइ अबेर कऽ उठनौं मनमे कोनो ओझरी नै रहैन। किएक तँ काल्हिए कोर्टमे लिखि कऽ दऽ देलखिन जे, 'पिताक सम्पैतसँ कोनो मतलब नै अछि, तँए केससँ अलग कएल जाए।' तैसंग बेटोकेँ नोकरी भऽ गेलैन जे ज्वाइन करए काल्हिए माए आ स्त्री संग गेल। पिताक देल सम्पैतक लड़ाइमे अपनो बीस बर्खक कमाइ गेल रहैन। मुदा प्राप्तिक नाओंपर जान बँचा लड़ाइसँ अलग भेला...।

हेमन्तक मनमे उठलैन जे जहिना पिताक सम्पैतमे किछु नै प्राप्त भेल तहिना तँ रमेशोकेँ हमरा अरजल सम्पैतमे नइ हेतइ। मुदा हमरा आ रमेशमे अन्तर अछि। हम तीन भाँइ छी, जहिक बीच विवाद भेल मुदा रमेश तँ असगरे अछि...।

ओना, हेमन्तक मनक चिन्ता काल्हिए समाप्त भऽ गेल रहैन मुदा काजक व्यस्तता मनकेँ असथिर हुअ नै देलकैन। एके बेर आठ बजे रातिमे असथिर भेला। तेकर पछाइत पर-पैखाना करैत, हाथ-पएर धोइत, खेनाइ खाइत नअ बजि गेलैन। भरि दिनक झमारल तँए ओछाइनपर पहुँचते तेना नीन आबए लगलैन जे रेडियो खोलि समाचार सुनए चाहलैन, सेहो नइ भेलैन, रेडियो बजिते रहल आ अपने सुति रहला।

नीन टुटिते डॉक्टर हेमन्तकेँ चाहक तृष्णा एलैन। मुदा घरमे कियो नहि। असगरे। नोकर ऐ दुआरे नै रखने जे काल्हि धरि पत्नी, बेटा-पुतोहु सभ रहैन, जे सभ घरक काज सम्हारैत रहथिन। ओना, चाहक सभ समचा घरेमे खाली बनौनिहार नहि अछि। ..बिछानपर सँ उठि नित्य-कर्म

करैत मनमे एलैन जे चाह पीब। मुदा चाह औत केतएसँ। से नहि तँ पहिने दाढ़िये बना लइ छी आ क्लिनिक जाए लगब तँ रस्तेमे चाह पीब लेब। मुदा भोरे-भोर चाहक दोकानपर तँ ओ जाइए, जेकरा घर-परिवार नइ रहै छइ। हमरा तँ सभ किछु अछि। ओह! से नहि तँ अपने चाह बना लेब। चाह बना, कुरसीपर बैस पीबए लगला आकि तखने फाटकपर सँ अवाज आएल-

“डॉक्टर साहैब, डॉक्टर साहैब।”

टेबुलपर कप रखि, फाटक दिस बढ़ैत डॉक्टर हेमन्त बजला-

“हँ, अबै छी।”

फाटकक बाहर डाकिया कन्हामे झोरा लटकौने हाथमे दूटा लिफाफ आ रसीद नेने ठाढ़। डाकियाकेँ देख मुस्कियाइत डॉक्टर साहैब बजला-

“भोरे-भोर कोन शुभ-सन्देश अनलौं हेन?”

मुदा डाकिया किछु बाजल नहि। खाँखी शर्टक ऊपरका जेबीसँ पेन निकालि, रसीदो आ पेनो बढ़ा देलकैन। दुनू रसीदपर हस्ताक्षर कऽ दुनू लिफाफ नेने फेर कुरसीपर बैस डॉक्टर हेमन्त चाहक चुस्की लिअ लगला। एकटा लिफाफकेँ टेबुलपर रखि, दोसरकेँ खोलि पढ़ए लगला। सरकारी पत्रमे लिखल रहए-

“पत्र देखते डेरा छोड़ि दिअ। बाढ़िसँ बहुत अधिक जान-मालक नोकसान भेल अछि, तँए आइए लछमीपुर पहुँच जाइक अछि। तइमे जँ कोनो तरहक आना-कानी करब तँ पुलिसक हाथे पठौल जाएब। एक कॉपी पुलिसोक थानामे भेज देल गेल अछि।”

पत्र पढ़िते हेमन्तकेँ ठकमुड़ी लगि गेलैन। मने-मन सोचए लगला जे घरमे असगरे छी। केना छोड़ि कऽ जाएब। समय-साल तेहेन भऽ गेल अछि जे दिनो-देखार डकैती होइए। केतौ डकैती, केतौ चोरि, केतौ

अपहरण तँ केतौ हत्या हरिदम होइते रहैए। एहेन स्थितिमे घर छोड़ब उचित नहि। मुदा जहन नोकरी करै छी तँ आदेश मानै पड़त। जँ से नै मानब तँ जहिना बीस बर्खक कमाइ कोट-कचहरीक ईंटा गनैमे गेल तहिना जे पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि ओहो ससपेण्ड-डिस्चार्जमे जाएत...।

डॉक्टर हेमन्तकेँ कहियो जिनगीमे चैन नहि। घोर-घोर मन होइत रहैन। चाहो सरा कऽ पानि भऽ गेल। गुन-धुन करैत दोसर पत्र खोलला। पत्रमे लिखल रहए-

"डॉक्टर हेमन्त! काल्हि चारि बजे पछबरिया पोखैरक पछबरिया महारमे जे पीपरक गाछ अछि, ओइ गाछ लग पहुँच हमरा आदमीकेँ दू लाख रूपैआ दऽ देबै, नहि तँ परसू ऐ दुनियाकेँ नइ देख सकब।"

पत्र पढ़िते केराक भालैर जकाँ हेमन्तक करेज डोलए लगलैन, सौंसे देहसँ पसीना निकलए लगलैन, थरथराइत हाथसँ पत्र खसि पड़लैन। मनक विचार विवेक दिस बढ़ए लगलैन...।

जहिना कियो सघन बोनमे पहुँच जाइत आ एक दिस बाघ-सिंहक गर्जन सुनैत तँ दोसर दिस सुरूजक रोशनी कम भेने अन्हार बढ़ैत जाइत, तहिना हेमन्तकेँ हुअ लगलैन। खाली मन छटपटा उठलैन। की करब, की नै करब से बुझबे ने करैथ। जहिना भोथहा कोदारिसँ सक्कत माटि नै खुनाइत तहिना हेमन्तोक विचार समस्याकेँ समाधान नै कऽ रस्तेमे विलीन भऽ जाइत। लगमे कियो दोसर नहि, जे मनक बात सुनितैन, जहूसँ किछु मन हल्लुक होइतैन। तखने अस्पतालक एकटा कम्पाउण्डर रिक्सासँ आबि गेँटपर पहुँच बाजल-

"डॉक्टर साहैब..?"

कम्पाउण्डरक अवाज सुनि हेमन्त धड़फड़ा कऽ उठि गेँट दिस बढ़ला। गेँटपर रिक्सा लागल। रिक्सापर दूटा काटुन लादल।

कम्पाउण्डरो आ रिक्शोबला रिक्सासँ हटि, बीड़ी पिबैत। डॉक्टर हेमन्तपर नजैर पड़िते कम्पाउण्डर हाथक बीड़ी फेक, आगू बढ़ि प्रणाम करैत कहलकैन-

“लगले तैयार भऽ चलू, नहि तँ पुलिस आबि कऽ बेइज्जत करत। बेइज्जत तँ हमरो करैत मुदा पुलिसकेँ अबैसँ पहिनहि हम काटुन रिक्सापर चढ़बैत रही, तँए किछु ने कहलक। रस्तामे अबै छेलौं तँ मोहनबाबूकेँ गरियबैत सुनलिऐन, तँए देरी नै करू। नबे बजे गाड़ी अछि आ सबा आठ बजैए। अपना दुनू गोरे एक टीममे छी।”

जहिना जुड़शीतलमे मुइलो नढ़ियापर लाठी पटकैत तहिना कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तकेँ भेलैन। मिरमिराइत बजला-

“दिनेश, हमरा तँ रातिए-सँ तेते मन खराब अछि जे किछु नीके ने लगैए। एक्को मिसिया देहमे लज्जैत नहि बुझि पड़ैए। होइए जे तिलमिला कऽ खसि पड़ब।”

कम्पाउण्डर-

“दबाइ खा लिअ, थोड़बे कालमे ठीक भऽ जाएब।”

हेमन्त-

“देहक दुख रहैत तहन ने, मनक दुख अछि। ओ केना दबाइसँ छुटत।”

हेमन्तक मन आगू-पाछू करैत देख कम्पाउण्डर कहलकैन-

“एक तँ ओहिना मन खराब अछि... ।”

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मन आरो मौला गेलैन। मनमे अनेको प्रश्न उठए लगलैन। देरी हएत तँ जवाबो देबए पड़त। मुदा घरो छोड़ब तँ नीक नै हएत। जखने घर छोड़ब तखने उचक्का सभ सभटा लूटि-ढँगेर कऽ लऽ जाएत। अपने नइ रहने क्लिनिको नहियेँ चलत।

अखन जँ रमेशोकेँ अबैले कहबै सेहो केना हएत। काल्हिए तँ ओहो ज्वाइन केलकहेँ। अगर जँ ओकरा माइए-केँ अबैले कहबैन तँ ओहो जपाले। किएक तँ रोज देखै छिऐ अपहरणक घटना...। तैबीच हड़बड़बैत कम्पाउण्डर टोकलकैन-

"अहाँ दुआरे हमहूँ नै मारि खाएब। हम जाइ छी।"

अधमड़ू भेल हेमन्त बजला-

"दू मिनट रूकह, कपड़ा बदलै छी।"

हाँइ-हाँइ कऽ कपड़ा बदैल, बैगमे लुंगी, गमछा, शर्ट, पेन्ट, गंजी रखि हेमन्त विदा भेला। रिक्सापर चढ़िते रहैथ आकि पुलिसक गाड़ी पहुँच गेल। तेते हड़बड़ा कऽ विदा भेल रहैथ जे मोबाइल, घड़ी, दाढ़ी बनबैक वस्तु छुटिए गेलैन। पुलिसक गाड़ी देख जे हड़बड़ा कऽ रिक्सापर चढ़ैत रहैथ तखने चश्मा खसि पड़लैन। जेकर एकटा शीशो आ फ्रेमो टुटि गेलैन। पुलिसक गाड़ीकेँ घुमैत देख मनमे शान्ति एलैन। रिक्सापर चढ़ि थोड़े आगू बढ़ला कि डॉक्टर सुनीलकेँ बच्चा सबहक संग बजारसँ डेरा जाइत देखलखिन। सुनील बाबूकेँ देख कम्पाउण्डरसँ पुछलखिन-

"सुनील बाबू सभकेँ ड्यूटी नइ भेटलैन अछि, की?"

कनी काल चुप रहि कम्पाउण्डर कहलकैन-

"नीक-नहाँति तँ नहि बुझल अछि मुदा बुझि पड़ैए, जे सभ अस्पतालमे बेसी समय दइ छथिन हुनका सभकेँ छोड़ि देल गेलैन अछि।"

कम्पाउण्डरक बात सुनि डॉक्टर हेमन्तकेँ अपनापर ग्लानि भेलैन। मन पड़लैन सुनील बाबूक परिवार आ जिनगी। सुनील बाबू सेहो डॉक्टर। दू भाँइक भैयारी। पितो जीविते। चारि बहिन। चारू सासुर बसैत। बहिन सबहक सासुर देहातेमे, जैठाम पढ़ै-लिखैक नीक बेवस्था नहि। ओना, अपनो सुनील बाबू गामेमे रहि पढ़ने छला। डॉक्टरी पास

केलापर गाम छोड़लैन। हुनकर भैया दरभंगेक हाइ स्कूलमे शिक्षक। परिवारो नमहर। माए-बापक संग दुनू भाँइक पत्नी आ बच्चा। तैपर सँ चारू बहिनक पढ़ै-लिखैबला बच्चा सभ। सुनील बाबूक जिनगी आन डॉक्टरसँ भिन्न। मात्र दू घन्टा अपन क्लिनिक चलबैथ। आ नित्य आठ घन्टा समय अस्पतालमे दैथ। अपना क्लिनिकमे चारिटा कम्पाउण्डर आ जाँच करैक सभ यंत्र रखने। जाँच करैक पाइमे सभ कम्पाउण्डरकेँ परसेनटेज दैथ। जइसँ काजो अधिक होइन। कम्पाउण्डरो सभकेँ नीक कमाइ भऽ जाइत, तँए इमानदारीसँ ओहो सभ श्रम करैत। ओना, सभ काज कम्पाउण्डरे कऽ लैत मुदा हिसाब-बाड़ी आ जाँचक परताल अपनेसँ करैथ। जइसँ अस्पतालोमे जाँच करौनिहार दोहरा कऽ अबैत। आ आन-आन प्राइवेट खानगी जाँच घरक काज सेहो पतराएल। तेतबे नहि, डॉक्टर सुनीलक चर्चा सीतामढ़ी, दरभंगा, सुपौल आ समस्तीपुर जिलाक गाम-गामक लोकक बीच होइत। जहिना धारक पानि शान्त आ अनवरत चलैत रहैत, तहिना सुनीलक परिवार। कोनो तरहक हड़-हड़-खट-खट परिवारमे कहियो नै होइत...।

डॉक्टर सुनीलक परिवारक सम्बन्धमे सोचैत-सोचैत डॉक्टर हेमन्त अपनो परिवारक सम्बन्धमे सोचए लगला। मन पड़लैन पिता। पिता बंगालसँ डॉक्टरी पढ़ि गामेमे प्रैक्टीस शुरू केलैन। किएक तँ सरकारी अस्पताल गनल-गूथल छल। मुदा रोगीक कमी नहि। कमी इलाज आ इलाज कर्ताक। नमहर इलाका। दोसर डॉक्टर नहि। गाम-घरमे ओझा-गुनी, झार-फूक, जड़ी-बुटीसँ इलाज चलैत। ओना, हेमन्तक पिता-डॉक्टर दयाकान्त सभ रोगक जानकार, मुदा तीनिए तरहक रोगक–टुटल हाथ-पैरक पलश्तर, सँपकट्टी आ बतहपन्नी–इलाजसँ पलखैत नहि। तँए ओझो-गुनीक चलती पूर्ववते। कमाइयो नीक। जइसँ दू-महला मकानो आ पचास बीघा खेतो कीनलैन। तैसंग तीनू बेटोकेँ खूब पढ़ौलैन। जेठका ओकील, मैझला डॉक्टर आ छोटका प्रोफेसर। जाधैर दयाकान्त जीबैत

रहलखिन ताधैर गामो आ इलाकोमे सुसभ्य आ पढ़ल लिखल परिवारमे गिनती होइन। तीनू भैंयोक बीच अगाध सिनेह। जेठ-छोटक विचार सबहक मनमे। जइसँ माइयो-बापकेँ खुशी। ओना, माए पढ़ल-लिखल नहि, मुदा परम्परासँ सभ बुझैत। जखन कि पिता आधुनिक शिक्षा पाबि आधुनिक नजैरसँ सोचैबला। तीनू भाँइक मेहनत देख पिताकेँ ई खुशी होनि जे परिवारक गाड़ी आगू-मुहेँ नीक जकाँ ससरत। बेटा सबहक बिआह इलाकाक नीक-नीक परिवारमे पढ़ल-लिखल लड़कीक संग केलैन। दहेजो नीक भेटलैन।

दयाकान्त मरि गेलखिन मुदा स्त्री जीविते रहैन। तीनू भाँइ अपन-अपन जिनगीमे ओझराएल। अपन-अपन परिवारक संग रहैत, घरपर खाली माइए-टा। तीनू भाँइक परिवारक गारजनी स्त्रीक हाथमे। एक-दोसरसँ आगू बढ़ैक हरिदम परियास करैत। जइसँ गामक सम्पैतपर नजैर जाए लगलैन। गामक सम्पैत अधिक-सँ-अधिक हाथ लागए तइ भाँजमे बौद्धिक व्यायाम नीक-नहाँति शुरू भेल। मुकदमा बाजी भेल। एकटा कोठरी आ दू बीघा खेत माएकेँ कोटसँ भेटलैन। बाँकी घरो आ खेतो जप्त भऽ गेलैन। एक साए चौआलीस लगि गेलै जइसँ पुलिसक ड्यूटी भेल। बीस बर्खक पछाइत डॉक्टर हेमन्त लिखि कऽ कोर्टमे दऽ देलखिन जे हमरा ऐ सम्पैतसँ कोनो मतलब नहि।

दरभंगा प्लेटफार्मपर डॉक्टर हेमन्त देखलैन जे दर्जनो डॉक्टर जा रहल छी। दर्जनो कम्पाउण्डरो छइ। मुदा सबहक मुँह लटकल। एक्को मिसिया मुँहमे हँसी नहि। जहिना ठनका ठनकलापर सभ अपने-अपने माथपर हाथ रखि साहोर-साहोर करैत तहिना बाढ़िक इलाकाक ड्यूटीसँ सबहक मनपर भारी बोझ, जइसँ सभ मने-मन कबुला-पाती करैत। ‘हे भगवान’, ‘हे भगवान’ करैत। कियो-केकरो टोकैत नहि। आँखि उठा कऽ देख फेर निच्चाँ कऽ लइत।

निर्मली जाइवाली गाड़ी पहुँचल। गाड़ी पहुँचते सभ हड़बड़ करैत,

अपनो आ समानो सभ उठा-उठा गाड़ीमे चढ़ौलैन। हेमन्तो चढ़ला। कम्पाउण्डरकेँ बीड़ीक तृष्णा चढ़लै। दुनू काटुन गाड़ीमे चढ़ा अपने उतैर कऽ पानक दोकान दिस बढ़ल। तखने पनरह-बीसटा तरकारीवाली आबि गाड़ीक डिब्बामे कियो छिट्टा चढ़बैत तँ कियो मोटा। तेसर यात्री सभ, तरकारीवालीक काँइ-कच्चर सुनि-सुनि आगू बढ़ि जाइत। कम्पाउण्डरो हाँइ-हाँइ कऽ चारि दम बीड़ी पीब दौगल आबि बोगीक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। तरकारीवाली सबहक झुण्ड देख कम्पाउण्डरकेँ मनमे हुअ लगलै जे हमरा चढ़िए ने हएत। चुपचाप निच्चाँमे ठाढ़। गाड़ीक भीतर बैसल एकटा पसिन्जर उठि कऽ आबि एकटा मोटाकेँ निच्चाँ धकेल देलक। जइ तरकारीवालीक मोटा खसल रहै ओ ओइ आदमीक गट्टा पकैड़ निच्चाँ उतारलक। निच्चाँ उतारिते घोरन जकाँ सभ तरकारीवाली लुधैक गेल। गारियो खूब पढ़लकै आ मारबो केलकै। तखने बोगीक मुँह खाली देख कम्पाउण्डर चढ़ि गेल।

गाड़ीकेँ पुक्की दैते सभ हाँइ-हाँइ कऽ चढ़ए लगल मुदा झगड़ा नै छुटलै। गारि-गरौवैल चलिते रहलै। जेते हल्ला सौंसे गाड़ीमे लोकक बजलासँ होइत रहै, ओते खाली ओइ एक्के डिब्बामे होइ। अकैछ कऽ डॉक्टर हेमन्त सीटपर सँ उठि समान रखैबला ऊपरकापर जा कऽ बैगकेँ मुड़ी-तरमे रखि पड़ि रहला। ओंघराइते अपना जिनगीपर नजैर गेलैन। मने-मन सोचए लगला जे पिताजी तँ हमरे सबहक सुख-ले ने ओते सम्पैत अरजलैन। मुदा की हमरा सभकेँ ओइ सम्पैतसँ सुख होइए? अपनो कमाइ तँ कम नै अछि। मुदा चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे चैनसँ केते समय बितैए? जहिना खाइ काल फोन अबैए तहिना सुतै काल। की यएह छी सुखसँ जिनगी बिताएब? ..मुदा ऐ प्रश्नक उत्तर सोचमे ऐबे ने करैन। फेर मन उनैट कऽ जिनगीक पाछू-मुहेँ घुरलैन। मनमे एलैन, जे धाकर सन-सन तीन बेटाक माए छी, ओइ माएकेँ कियो एक लोटा पानि देनिहार नहि। किएक ने वेचारीक मनमे उठैत हेतैन जे ऐ बेटासँ बिनु बेटे नीक।

हमरो अहिना नइ हएत, तेकर कोन गारंटी।

गाड़ी घोघरडीहा पहुँचल। यात्री सभ उतरबो करए आ बजबो करए जे किसनीपट्टीसँ आगू लाइन डुमि गेल छै, तँए गाड़ी आगू नै बढ़त। कम्पाउण्डर उठि कऽ हेमन्तक पएर डोलबैत पुछलकैन-

"डॉक्टर साहैब, नीन छिऐ।"

"नहि।"

"सभ उतैर रहल अछि। गाड़ी आगू नइ बढ़त। उतैर जाउ?"

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेलैन। मुदा उपाय की? अधमड़ू जकाँ उतरलैथ। प्लेटफार्मपर रिक्साबला, टमटमबला हल्ला करैत जे कोसीक पछबरिया बान्हपर जाएब?"

एकटा रिक्साबलाकेँ हाथक इशारासँ कम्पाउण्डर हाक पाड़ि पुछलक-

"हम सभ लछमीपुर जाएब। तोरा बुझल छह?"

रिक्साबला-

"हमरो घर लछमीएपुर छी। बाढ़ि दुआरे ऐठाम रिक्सा चलबै छी।"

कम्पाउण्डर-

"ऐठामसँ केना-केना रस्ता हेतइ?"

रिक्साबला-

"ऐठामसँ हम बान्हपर दऽ आएब। आ ओतएसँ नाव भेटत, जे लछमीपुर पहुँचा देत। ऐठामसँ हम नेने जाएब आ अपने भैयाबला नावपर चढ़ा देब।"

कम्पाउण्डर-

"बड़बढ़ियाँ, काटुन चढ़ाबह।"

सभ कियो रिक्सापर चढ़ि विदा भेल। पुबरिया गुमती लग जैठाम चाउरक बड़का मिलक खंडहर अछि तेतए पहुँच रिक्साबलाकेँ हेमन्त पुछलखिन-

"लछमीपुर केहेन गाम अछि?"

रिक्साबला-

"बड़ सुन्दर गाम अछि। सन्मुख कोसीसँ मील भरि पछिमे अछि। गामक सभ मेहनती। बाढ़िक समयमे हम सभ रिक्सा चलबै छी आ जखन पानि सटैक जाइ छै तहन जा कऽ खेती करै छी। गाइयो-महींस पोसने छी। केते गोरे नाव चलबैए आ केते गोरे मछबारि करैए। हमरा गामक लोक पंजाब, डिल्ली नै जाइए। आन-आन गाममे तँ पंजाब, डिल्लीक धरोहि लागि जाइ छै, से हमरा गाममे नइए।"

माछक नाओं सुनि बिच्चेमे कम्पाउण्डर पुछलकै-

"तब तँ माछ खूब सस्ता हेतह?"

"हँ, कोनो की जीरा रहै छै, सभ अनेरूआ। एहेन सुअदगर माछ शहर-बजारमे थोड़े भेटत। शहर-बजारक माछ तँ सड़ल-सुड़ल पानिक डबरा महक रहैए।"

कोसीक पछबरिया बान्हपर पहुँचते रिक्साबला अपन भौयाक घाटपर रिक्सा लऽ गेल। भाइक रिक्सा देखते भागेसर नावपर सँ बान्हपर आएल। दुनू भाँइ दुनू काटुन लऽ जा कऽ नावपर रखलक। अदहा नावपर तख्ता बिछौने आ अदहा ओहिना। तख्तापर पटेरक पटिया बिछौल, जैपर बैस हेमन्त पूब-मुहेँ तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे समुद्रमे जा रहल छी। सौंसे देह सर्द भऽ गेलैन। मनमे डर पैस गेलैन जे केना ऐ पानिमे जाएब। मन पड़लैन दरभंगाक पीच परहक कार। मुदा एक्सिडेंट तँ ओतौ होइ छइ। ओतौ लोक मरैए। फेर मनमे एलैन जे महेन्द्रूक नाव जकाँ ऐ नावमे इंजनो नइ छइ। जँ कहीं बीचमे लग्गी छुटि-टुटि जेतै तँ भँसिए

जाएब। केतए जाएब केतए नहि। अनासुरती मनमे एलैन जे अखन धरि कम्पाउण्डरकेँ नोकर जकाँ बुझै छेलिऐ ओ उचित नहि। ई तँ छोट भाए-तुल्य अछि। नव विचार मनमे उठिते कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन-

"बौआ, धन्य अछि ऐठामक लोक। जे सचमुच देवीक पूजो करैए आ लड़बो करैए। किए ने जिबठगर हएत।"

नाव खुगलै, माँगि सोझ कऽ नैया–कमलेसरीक गीत उठौलक। नैयाकेँ लग्गी उठबैत आ पानिमे रखैत देख डॉक्टर हेमन्त मने-मन सोचए लगला जे एहेन मेहनत केनिहारकेँ कोन जरूरत दबाइ आ व्यायामक छइ। मन पड़लैन रामेश्वरम्। समुद्रक झलकैत पानि। जइमे लहैर सेहो उठैत। तहिना तँ ओहूठाम पानिक लहैर अछि। फेर मन पड़लैन जेसलमेरक बाउल। अहिना उज्जर धप-धप केतौ-सँ-केतौ बाउल। कमलेसरीक गीत समाप्त होइते नाविक कोसी मैयाक गीत उठौलक। अजीब साजो। जहिना नावमे 'खट-खट'क अवाज तहिना लग्गीक। लग्गीक पानि देहोपर खसै मुदा तँए की ओकर पसीना निकलब थोड़े रूकइ।

डॉक्टर हेमन्तक मन फेर उनटलैन। मिलबए लगला समुद्रक लहैरकेँ कोसीक लहैरसँ। समुद्र रूपी समाजमे सेहो समुद्रे जकाँ लहैरो उठैए आ धारक वेग जकाँ वेगो, मुदा ओ धीरे-धीरे असथिर भऽ जाइए। मुदा कोसीक धार जकाँ जे वेग चलैत ओ पैघसँ पैघ पहाड़केँ तोड़ि धारो बना दैत आ समतल खेतो। तेतबे नहि, पुरानसँ पुरान गामक अधला परम्पराकेँ तोड़ि नवमे सेहो बदैल दइत। जहिना मौसम बदललापर गाछक पुरान पात झड़ि नव पातसँ पुनः लदि जाइत, तहिना। ..असीम विचारमे डुमल हेमन्तक मुँह अनासुरती नाविककेँ पुछलक-

"केते दूर अहाँक गाम अछि?"

नैया-

“छह कोस।”

“केते समय जाइमे लगत?”

“भट्ठा दिस जाएब, तँए जल्दीए पहुँच जएब।”

जल्दीक नाओं सुनि हेमन्तक मनमे आशा जगल। मुदा ओ आशा लगलेमे जाए लगलैन। किएक तँ सौंसे पानियेँ देखैथ, गाम-घरक केतौ पता नहि। चिन्तित होइत चुप भऽ गेला। ..अपना सुढ़िमे नैया गीत गबैत। मनमे कोनो विकारे नहि। मुदा हेमन्तकेँ करवनो गीत नीको लगैन आ करवनो झड़कबाहियो उठैन। तरवने एकटा मुर्दा भँसल जाइत रहए। सबहक नजैर ओइ मुर्दापर पड़ल। मुर्दा देख हेमन्तक नजैर अस्पतालक मुर्दापर गेलैन। मुदा दुनूक दू कारण। एकक जिनगीक अन्त रोगसँ तँ दोसराक बाढ़िसँ। नब-नब समस्या उठि-उठि हेमन्तक मनकेँ घोर-मट्ठा कऽ देलकैन। मनक सभ विचार हेराए लगलैन। तैबीच एकटा किलो चारिए-क रौह माछ कुदि कऽ नावमे खसल। माछ देख हेमन्तोक आ कम्पाउण्डरोक मन चट-पट करए लगलैन। लग्गीकेँ माँगिपर रखि भागेसर माछकेँ पकैड़, पानि उपछैबला टीनमे रखैत बाजल-

“अहाँ सबहक जतरा बनि गेल!”

नैयाक शुभ बात सुनि हेमन्तक मन फेर ओझरा गेलैन। मनमे उठए लगलैन जे जतरा केकरा कहबै? घरसँ विदा भेलौं तेकरा आकि कार्यस्थल तक पहुँचैकेँ? आकि काज सम्पन्न कऽ घर पहुँचलाकेँ? तहूसँ आगू जे काजक बीचोमे नव काज उत्पन्न भऽ सकैए...। नैयाकेँ पुछलखिन-

“आब केते दूर अछि?”

हाथ उठा आँगुरसँ दच्छिन दिस देखबैत नैया कहलकैन-

“वएह हमर गाम छी। गोटे-गोटे जमुनीक गाछ देखै छिऐ? अदहा कोस करीब हएत।”

‘अदहा कोस’ सुनि कम्पाउण्डर चहैक उठल-

"डॉक्टर साहैब, पाँच बजैए। अदहा घन्टा आरो लागत। साढ़े पाँच बजे तक पहुँच जाएब।"

"भने सबेरे-सकाल पहुँच जाएब।"

कहि डॉक्टर हेमन्त देखए-सोचए लगला, अकासमे चिड़ै सभ नै उड़ैए। किएक तँ चिड़ै ओइठाम उड़ैत जैठाम रहैक ठौर होइत। मुदा से तँ नइ छै, सौंसे बाढ़िये पसरल अछि। मुदा तैयो गोटे-गोटे मछखौका चिड़ै जरूर उड़ैए...।

लछमीपुर दिस अबैत नावकेँ देख गामक धियो-पुतो, स्त्रीगणो आ गोटे-गोटे पुरुखो घाटपर ठाढ़ भऽ एक दोसरकेँ कहैत-

"चाउर-आँटाबला छिऐ।"

"नुओ-बसतर हेतइ।"

"तिरपालो हेतइ।"

"बड़का हाकीम सभ छिऐ।"

घाटपर आबि नाव रूकल। मुदा पेन्ट-शर्ट पहिरने डॉक्टर आ कम्पाउण्डरकेँ देख जनिजाति सभ मुँह झाँपए लगल। मरद सभ सहैम गेल। धिया-पुता डेरा गेल। नावकेँ बान्हि नैया सुलोचनाकेँ कहलक-

"हे गइ सुलोचना, डाकदर साहैब सभ छथिन। बक्सामे दबाइ छिऐ। हम दबाइ उतारै छी तूँ टीन उतार। टीनमे एकटा नमहर माछ छौ। खूब नीक जकाँ माछकेँ तरि डाकदर साहैबकेँ खुआ दहुन।"

माछ उतारि सुलोचना अँगना लऽ गेल। टीन रखि बाड़ीक कलपर आबि हाथ धोलक, आँचरसँ हाथ पोछि, स्कूलक ओछाइन झाड़ि बिछबए लगल। बिछान बिछा, दौग कऽ आँगनसँ बड़का जाजीम आ दूटा सिरमा आनि लगौलक। हेमन्तो आ दिनेशो आगूमे ठाढ़। मुदा ओते लोकक बीच दुनू गोरेक नजैर सुलोचनेक देह आ काजपर नचैत रहैन।

..बिछान बिछा सुलोचना हेमन्तकेँ कहलकैन-

"डॉक्टर साहैब, बिछान बिछा देलौं, आब अराम करू।"

दिनेश चुप्पे। मुदा हेमन्त बजला-

"बुच्ची, देह भारी लगैए। ओना, नावपर आरामे सँ एलौं। मुदा तैयो देह भरियाएल बुझि पड़ैए। पहिने नहाएब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि सुलोचना आँगन बाल्टी-लोटा आनए गेल। आँगनसँ बाल्टी-लोटा नेने कलपर पहुँचल। दुनूकेँ माटिसँ माँजि, बाल्टीमे लोटा रखि, पानि भरि, हेमन्तकेँ कहलक-

"डॉक्टर साहैब, नहा लिअ।"

चहारदेबालीसँ घेरल टंकीपर नहाइबला डॉक्टर हेमन्त खुला धरती-अकासक बीच नहाइले जेता। तँए किछु सोचै-विचारैक प्रश्न मनमे उठि गेलैन, मुदा बहुत सोचैक जरूरत नइ पड़लैन। अपना-अपना उमरबला सभकेँ डोरीबला पेन्ट, तैपर सँ केकरो लुंगी तँ केकरो चरिहत्थी तौनी पहिरने देखलखिन। ओहो सएह केलैन। मुदा बारह बर्खक सुलोचना कलपर सँ हटल नहि। मातृत्वक दुआरिपर पहुँचल सुलोचनामे फूलक टुस्सी जरूर अबि गेल छेलइ। मुदा हेमन्तोक मनमे डॉक्टरक विचार। ओना, डॉक्टर हेमन्त शरीरक सभ अंगक गुण-धर्म बुझैथ मुदा एहनो तँ वस्तु अछि जे गर्म हवाक रूपमे रहैत। जइमे आनन्द आ सृजनक गुण होइत। सुलोचनोमे फूलक कोढ़ी जे सुगन्धक वाल्यावस्थामे प्रस्फुटित होइत, महमही हवामे...।

एक लोटा माथपर पानि ढारला पछाइत हेमन्तक मनमे एलैन जे अखन हम दुनियाँक ओइ धरतीपर छी जैठाम जीवन-मरण संगे रहैए। मुदा तैठाम एहेन सौम्य-सुशील-अल्हड़ वाला केते खुशीसँ चहचहा रहल अछि। तीन साल पहिलुका बात छिऐ। जइ बाढ़िमे केतेको गाम, केतेको

मनुख आ केतेको सम्पैत नष्ट भेल छल। तँए की? जे बँचल अछि ओ ओइ गामकेँ छोड़ि देत। कथमपि नहि। मुदा बाढ़ि अनहोनी नइ रहए। बैरेजक फाटक खोलल गेल रहइ। फाटको खोलैक मजबुरी रहइ। किएक तँ बैरेजक उत्तर तेते पानिक आमदनी भऽ गेलै जे दुर्दशाक अन्तिम शिखरपर पहुँच सकै छल। मुदा सुदूर गाममे जानकारीक साधन नहि, आ ने बँचैक उपाय। कोसीक दुनू बान्हक बीच समुद्र जकाँ पानि पसैर गेल। थाहसँ अथाह धरि।

कुनौलीसँ दच्छिन, कोसी धारक कातमे एकटा गाम। ओही गामक सुलोचना। जेकर सभ किछु मनुखसँ घर धरि दहा गेलइ। मुदा सुलोचना जे बँचल से पढ़ैले कुनौली गेल छल तँए। स्कूलसँ घर जाइ काल बाढ़िक दृश्य देखलक। दृश्य देख बान्हेपर बपहारि काटए लगल। तखने लछमीपुरक चारि गोरे बजारसँ समान खरीद नाव लग अबैत रहए। सुलोचनाकेँ कनैत देख जीयालाल पुछलकै-

“बुच्ची, किए कनै छेँ?”

कनैत सुलोचना-

“बाबा, हम पढ़ैले गेल छेलौं। तैबीच हमर गामे दहा गेल। आब हम केतए रहब?”

जीयालाल-

“हमरा संगे चल। जहिना बारहटा पोता-पोतीकेँ पोसै छी तहिना तोरो पोसबौ।”

जीयालालक विचार सुनि सुलोचनाक हृदैमे जीबैक आशा जगल। कानब रूकि गेलइ। मुदा कखनो काल हुचकी उठिते रहलै। नावपर सभ समान रखि चारू गोरे बान्हपर आबि चीलम पीबैक सुर-सार करए लगल। एक भागमे सुलोचनो किताब नेने बैसल। बटुआ खोलि रघुनी चीलम, कंकड़क डिब्बा आ सलाइ निकालि बीचमे रखलक, एक गोरे चीलमक

ठेकी निकालि, चीलमो आ ठेकियोकेँ साफ करए लगल। दोसर गोरे डिब्बासँ कंकड़ निकालि तरहत्थीपर औंठासँ मलए लगल। चीलम साफ भेलइ। ओइमे ठेकी दऽ कंकड़बला हाथमे देलक। कंकड़बला चीलममे कंकड़ बोझि दुनू हाथसँ चीलमक पैछला भाग पकैड़ मुँहमे भिरौलक। मुँहमे भिरैबते रघुनी सलाइ खड़ैर कंकड़मे लगबए लगल। दू-चारि बेर मुँहक इंजनसँ प्रेशर दैते चीलम सुनैग गेल। चीलमकेँ सुनैगते तेते जोरसँ दम मारलक जे धुआँक संग धधरो उठि गेलइ। मुदा चीलमक दुषित हवासँ धधड़ा मिझा गेल। बेरा-बेरी चारू गोरे चीलम पीब मस्त भऽ नाव दिस विदा भेल। साँझू-पहरकेँ जहिना गाए-महींस बाधसँ घर दिस अबैत। जेकरा पाछू-पाछू छोट-छोट नेरू-पड़ू झुमैत, लुदुर-लुदुर मगन भऽ चलैत, तहिना सुलोचना लछमीपुरबला सबहक संगे पाछू-पाछू नावपर पहुँचल। नावपर चढ़िते लग्गा चलौनिहार कोसी महरानीक दुहाइ देलक। संगेमे सुलोचनो बाजल-

"जय।"

नाव खुगल। लछमीपुरक चारू गोरेक मन सुलोचनाक जिनगीपर। मुदा सुलोचनाक परिवारक बिछोहक दुखसँ सुख दिस जाए लगल। जइ सुलोचनाक गाम आ परिवारक केतौ अता-पता नहि, ओइ सुलोचनाक मनमे उठए लगल जे गाम-घर भलेँ दहा गेल मुदा माए-बाप जरूर जीबैत हएत। किएक तँ मनुख निर्जीव नै सजीव होइत। बुधि-विवेक होइत। तँए ओ दुनू गोरे जरूर केतौ जीबैत हएत। जे आइ-ने-काल्हि जरूर मिलबे करत। तँए सुलोचनाक मनमे जिनगी भरिक दुख नहि, मात्र किछु दिनक दुख। जे कहुना नै कहुना कटिए जाएत। नाव लछमीपुर पहुँचल। जीयालालक बारहोटा पोता-पोती दौग कऽ नाव लग आएल। पोता-पोतीकेँ देख जीयालाल बाजल-

"बाउ, तोरा सभले एकटा बहिन नेने एलिअयह।"

सुलोचना पोता-पोती सबहक पाहुन भऽ गेल। दोसर दिन जीयालाल एकटा घर बना, सुलोचनाकेँ गामक बच्चा सभकेँ पढ़बैले कहलक। गामक बच्चा सभकेँ सुलोचना पढ़बए लगल। वएह सुलोचना छी।

हेमन्तो आ दिनेशो नहाएल। नहा कऽ जाबे हेमन्त कपड़ा बदैल, केश सेरिया, तैयार भेला ताबे सुलोचनो आ जीयालालक जेठकी पोती कमलियो चूड़ा भुजि, माछ तड़ि लेलक।

दूटा थारीमे चूड़ा-भुजा आ तड़ल माछ साँठि दुनू बहिन दुनू थारी नेने हेमन्त लग पहुँच आगूमे रखि देलकैन। बड़का फुलही थारी तइमे चूड़ाक ऊपरमे माछक नमहर-नमहर तड़ल कुट्टिया पसारल। थारी रखि कमली पानि आनए गेल आ सुलोचना आगूमे बैसल। दुनू गोरे खाइत-खाइत दसो माछक कुट्टिया आ थारियो भरि चूड़ा खा लेलैन। शुद्ध आ मस्त भोजन। पानि पीब ढेकार करैत दिनेश बाजल-

"डॉक्टर साहैब, आइ धरि हम एते नै खेने छेलौं।"

हेमन्त-

"से तँ हमरो बुझि पड़ैए।"

सुलोचना-

"डॉक्टर साहैब, चाहो पीबै?"

हेमन्त-

"पीबै तँ जरूर मुदा दू घन्टाक पछाइत। ताबे किछु काज करब। ओना, साँझ पड़ि गेल मुदा जाबे फरिच्छ छै ताबे दसो-पाँचटा रोगी जरूर देख लेब।"

सुलोचना-

"अच्छा, अहाँ तैयार हौउ, हम रोगी सभकेँ बजौने अबै छी।"

कम्पाउण्डर काटुन खोलि दबाइ निकालि पसाइर देलक। रोगी आबए लगल। रोगी देख-देख हेमन्त कम्पाउण्डरकेँ कहैत जाथिन आ कम्पाउण्डर दबाइ दैत जाए। अस्पताल जकाँ तँ सभ रंगक रोगी नहि। किएक तँ बाढ़िक इलाका तँए गनल-गूथल रोग। दबाइयो तेहने। तीनिए दिनमे सौंसे गामक रोगीकेँ देख डॉक्टर हेमन्त निचेन भऽ गेला। मुदा सात दिनक ड्यूटी। तहूमे कठिन रस्ता। मुदा पानि टुटए लगलै। पाँचम दिन जाइत-जाइत रस्ता सुखि गेल। मुदा थाल-खिचार रहबे करइ। आठम दिन भोरे हेमन्त सुलोचनाकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, आइ हम चलि जाएब।"

सुलोचना-

"ई तँ मिथिला छिऐ डॉक्टर साहैब, बिनु किछु खेने-पीने केना जाएब?"

कहि सुलोचना चाह बनबए गेल। तखने एकटा दोस्तसँ भेँट करए कम्पाउण्डर गेल। असगरे हेमन्त। मने-मन सोचए लगला जे सात दिनक समय जिनगीक सभसँ कठिन आ आनन्दक रहल। ई कहियो नै बिसैर सकै छी। बिसरैबला ऐछो नहि। आइ धरि एहेन जिनगीक कल्पनो नै केने छेलौं, जे बीतल। तैसंग एहेन मनुखक सेवो करैक मौका पहिल बेर भेटल। मौके नइ भेटल, बहुत किछु देखैक, भोगैक आ सीखैक सेहो भेटल। आइ धरि हम एहेन रोगीकेँ जेकरा सचमुच जरूरत छै, सेवा नइ केने छेलौं, खाली पाइ कमेने छेलौं। गाम-घरमे जेकरा पाइ छै वएह ने दरभंगा इलाज करबए जाइए। जेकरा पाइ नइ छै ओ तँ गामेमे छरपटा कऽ मरैए।

तैबीच सुलोचना चाह नेने आएल। कप बढ़बैत बाजल-

"मन बड़ खसल देखै छी, डॉक्टर साहैब।"

"नहि! कहाँ। एकटा बात मनमे आबि गेल तँए किछु सोचए

लगलौं।”

सुलोचना-

“ऐठाम केहेन लगैए डॉक्टर साहैब?”

सुलोचनाक प्रश्नक उत्तर नै दऽ हेमन्त चुप्प रहला।

हेमन्तकेँ चुप देख सुलोचना बाजल-

“हम तँ बच्चा छी डॉक्टर साहैब, तँए बहुत नै बुझै छी। मुदा तैयो एकटा बात कहै छी। जहिना चीनी मीठ होइए आ मिरचाइ कड़ू। दुनूमे कीड़ा फड़ि ओइमे अपन-अपन जीवन-यापन करैए। मुदा चीनीक कीड़ाकेँ जँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ एको क्षण जीवित नइ रहत, उचितो भेलइ। मुदा की मिरचाइक कीड़ा चीनीमे देला पछाइत जीवित रहत? तहिना गाम आ बजारक जिनगी होइए।”

सुलोचनाक बात सुनि डॉक्टर हेमन्त मने-मन सोचए लगला जे बात ठीके कहलक। अहिना तँ मनुखोमे अछि। मुदा ओ हएत केना। जाबे समाजिक जीवनमे समरसता नै औत ताबे अहिना होइत रहत।

दस बजे भोजन कऽ दुनू गोरे लुंगी-गंजी पहिर सभ कपड़ो आ जूत्तोकेँ बैगमे रखि, पएरे विदा भेला। हेमन्तक बैग सुलोचना आ दिनेशक बैग कमली लऽ पाछू-पाछू विदा भेल। किछु दूर गेलापर हेमन्त कहलखिन-

“बुच्ची, आब तों सभ घुमि जा।”

हेमन्तक बात सुनि सुलोचनाक आँखि नोरा गेल। डॉक्टर हेमन्तकेँ बैग पकड़बैत बाजल-

“अन्तिम प्रणाम, डॉक्टर साहैब।”

एकाएक हेमन्तक हृदैसँ प्रेमक अश्रुधारा प्रवाहित हुअ लगलैन। मुहसँ ‘प्रणाम’क उत्तर नै निकललैन। मुड़ी निच्चाँ केने आगू बढ़ि गेला।

मुदा किछुए आगू बढ़लापर बुझि पड़लैन जे सुलोचना आ कमलीक आँखि रूपी चारू तीर पाछूसँ बेधि रहल अछि! पाछू उनैट कऽ तकलैन तँ देखलखिन जे दुनू गोरे ठाढ़े अछि। मन भेलैन जे हाथक इशारासँ जाइले कहि दिऐ, मुदा अपना रूपपर नजैर पड़ि गेलैन। खाली पएर जाँघ तक समटल लुंगी, देहमे सेन्डो गंजी, माथक केश फहराइत, तैपर सँ थालक छिटका घुट्ठीसँ लऽ कऽ माथ धरि पड़ल। ..हाथक इशारासँ सुलोचनाकेँ हाक पाड़लखिन। सुलोचनो आ कमलियो हँसैत आगू बढ़ल। लगमे देख हेमन्तोक हृदैमे हँसी उपकल। मुस्कियाइत बजला-

"बुच्ची, हम अपन दरभंगाक पता कहि दइ छिअ। अबिहह।"

सुलोचना-

"हम तँ शहर-बजारमे हेराइए जाएब, डॉक्टर साहैब। अहाँ जाबे हमरा गाममे छेलौं ताबे बुझि पड़ै छल जे दरभंगा अस्पताल गामेमे अछि।"

कहि सुलोचना डॉक्टर हेमन्तक पएर छुबि गोड़ लागि घुमि गेल।

बान्हपर आबि दुनू गोरे थाल-कादो धोइ, पेन्ट-शर्ट पहिर स्टेशन दिस बढ़ला।

❑ साभार : गामक जिनगी

मनुखक मूल्य

एक दिन सिकन्दर आ अरस्तू केतौ जाइत रहैथ। रस्तामे एकटा नदी छल। जइ नदीमे नावपर पार हुअ पड़ै छेलइ। पहिने अरस्तू पार हुअ चाहै छला मुदा सिकन्दर हुनका रोकि अपने पार भेला। जखन सिकन्दर दोसर पार गेला तखन अरस्तूकेँ पार होइले कहलखिन। पार भेलापर अरस्तू सिकन्दरकेँ पुछलखिन-

“पहिने हमरा पार होइसँ किए मना केलौं?”

हँसैत सिकन्दर उत्तर देलखिन-

“अगर हम नदीमे डुमि जैतौं तैयो अहाँ हमरा सन-सन दसो सिकन्दर पैदा कऽ सकै छी मुदा जौं अहाँ डुमि जैतौं तँ हमरा सन-सन दशोटा सिकन्दर बुत्ते एकटा अरस्तू नै बनौल भऽ सकैए।”

सिकन्दरक विचार सुनि अरस्तू अपन जिनगीक मूल्य बुझलैन।

❑ **साभार : तरेगन**

तीन जुगिया भाय

केता बरीसक पछाइत तीन जुगिया भाय भेँट भेला। सेहो कि ओहिना थोड़े भेला, भेला तखन जखन आँखि मिचौनी ओझरीमे तेना ओझरा गेलौं जे बिनु हुनके ओझरी छुटब कठिन भऽ गेल। लाख नाङैर पटपटेलौं मुदा जेते ओझरी छोड़बऽ चाही तइसँ बेसी लागिये जाए। बेसीक माने एक्के रंगक नइ, केतेको रंगक लगि जाए। कखनो छोटका ओझरी नमहर बनि जाए, तँ कखनो अनठिया आबि मन घोर कऽ दिअए। कखनो ओझरी-सोझरी मिलि अधसोझरू बनि जाए...।

भेल ई जे नअ बजे रातिमे मुड़नियाँ भोज खा कऽ आबि ओछाइन पकैड़ लेलौं। निशाँएल मन रहबे करए, माने अन्नक निशाँ फुटे आ बर-बरीक निशाँ फुटे चढ़ल रहए, मुदा ऐ सबहक कोनो मद्दी नइ, असल रहै जे भरि पेट सुअन भेटल, तेकर निशाँ चढ़ल रहए। ओछाइनपर अबिते हाफी करैत निनियाँ देवीकेँ आवाहन केलिऐन कि जेना ओहो हमरे बाट तकैत रहैथ तहिना धड़धड़ाएले आबि वर दैत सुता देलैन।

नीन पड़िते बिसैर गेलौं जे मुड़नक भोज तँ खा लेलौं मुदा खाइक हिसाब जोड़बे ने केलौं जे कोन वस्तु केना बनौल गेल, केना परसल गेल आ केते खेलौं। जँ से हिसाब नइ जोड़ि लितौं तँ जश-अजश केना बिलैहतौं।

निशाँएल मनक निशाँ रातिक निशाँएल नीन सन्ध्या बेलाकेँ एक्के बेर धोबिया घाट जकाँ तेना उठा कऽ फेकलक जे तेसर घाटपर पहुँचा देलक। संध्या बेलासँ सोझहे प्रात: बेलामे पहुँच गेलौं।

तीन भोरमे नीन टुटल, नीन टुटिते मुँह-कानमे पानि लेलौं। पानि लइते पढ़ै-लिखैक विचार मनमे उठल। पेटक अन्न जखन करोटिया लइ छै तखन चाहक क्षुधा तँ कम मुदा किछु करैक क्षुधा बढ़िते छइ। जहिना सभकेँ बढ़ै छै तहिना बढ़ल। ओना, ओछाइनपर सँ उठि मुँह-कानमे पानि लऽ लेने रही, मुदा अन्हारे-अन्हार घरो आ घरक ओसारो रहबे करइ। ई काज- मुँह-कानमे पानि लेब- अन्हारेमे कऽ नेने रही। असलमे अन्हारोमे एहेन ठेकनाएल जगह अछि, जे दिनोमे आँखि मूनि जा सकै छी आ अन्हारोमे आँखि ताकियो कऽ आ मूनियोँ कऽ जा सकै छी। जहिना इतिहासक बात अछि-

‘चारि बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण

एते पर सुलतान है, मत चूको चौहान।’

तहिना अपनो घर-ओसार नपले अछि जे केते डेग टपने घरसँ निकलै छी, आ केते डेग टपने ओसारसँ...।

खेनिहारो सभ अपन नाप बनौनहि छैथ जे केते कौर कखैन खाएब। मुदा केते कौर कखैन खाएब तहूले तँ हिसाबक रेखागणित पढ़ऽ पड़त। जँ से नइ पढ़ि नेने रहब तखन तँ अनेरे जलखै बेरमे भरिपेटा कलौ खा लेब आ कलौ बेरमे अधपेटा जलखै चाहे जलपान जकाँ गिलास भरि पानि पीब लेब। तहिना बेरहट बेर रौतुका भरिपेटा कलौ खाएब आ बाइस बेरमे दिनका। जइसँ अनेरे दिन-रातिक बीच किरिया-कलाप करै-धरैमे कटमटीक संग कटकटी हेबे करत...।

मुदा से अपन हिसाब रेखागणितक डाँरि खींच, एक-दोसरसँ मुँह-मिलानी करैत खाइ-पीबैक हिसाब जोड़ि नेने छी। जोड़ि एना नेने छी जे

केतेटा दिन-रातिमे की सभ करैक अछि। जे सभ करैक अछि तइले केते उर्जा आ समैयक जरूरत अछि इत्यादि...।

समय तँ समय छी। ओ अहाँ विचारे नइ अपने विचारे अपने गतिये चलैत आबि रहल अछि, चलितो अछि आ आगूओ चलिते रहत। दिनो-राति एना सटल अछि जे रहत दिन आ देखबै जे राति अछि आ रहत राति तँ बुझि पड़त जे दिन अछि। माने ई जे दिनक बारह बजेसँ सेकेण्डो भरि आगू बढ़ने रातिक हिसाब हुअ लगैए आ बारह बजे रातिक पछाइत दिनक। मुदा ऐ पछड़ासँ अपनाकेँ कात रखैत अपन दिन-रातिक निरमान कऽ नेने छी। केने एना छी, अन्हारमे आँखि छोट पड़ि जाइए तँए दुनियाँक तामैन-कोरैन करैमे बाधा हएत मुदा घर-अँगना भरिक दुनियाँ बना, जइमे डिबिया वा बिजलीक बौल लगा इजोत करैत दिने जकाँ बना कऽ धऽ तँ सकै छी।

पढ़ैक विचार मनमे औनाइत रहए, मुदा अन्हारे-अन्हार पसरल। ने अकासमे शुक्ल पक्षक चान आ ने घरमे बिजली-लाइन, आ ने कोनो दोसर इजोतक जोगाड़। ओना, देशक आजादीक पैंसैठ बर्खक पछाइत बजलीक दर्शन गाममे भेल। जइ बीच तीन पीढ़ी ससैर कऽ आजादी-आजादी रटैत वंशक तीन सीढ़ी आगू बढ़ि गेल।

छोट-छीन हमर गाम रामनगर कोसिकन्हासँ बहुत हटल, कसवा कातक गाम छी । ओना, कोसिकन्हासँ हटल रहने कोसी बाढ़िक आकि कमला बाढ़िक आकि नेपालक बर्खाक संग पहाड़क पिघलल बर्फक धफाड़ नइ पड़ैए, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कोसी बाढ़िसँ केतौ खूब उपजा हुअए आकि कोनो गामे गंगा लाभ भऽ जाए मुदा हमरा गामक तँ एते उपकार भेबे कएल जे चारि इस्वी क बाढ़ि भीत घरकेँ भगा, ईंटा-पाथर दिस पठेबे केलक। तँए कि लोक चारि इस्वीसँ पहिलुका भीत घरकेँ बिसरियो तँ नहियेँ सकैए।

उन्नैस साए साठि-बासैठक करीब दरभंगासँ आगू बढ़ि बिजली झंझारपुरो दिस घुसकल। तइसँ पहिने गामक लोक किए सोचता जे बिजलियो सँ समाजमे इजोत अबै छइ। गामे-गाम केतौ पानिक कहात, केतौ अन्नक कहात तँ छेलैहे आ अछियो।

लोकक स्थिति आजादीक समय बदसँ बदतर छल। जहिना शासनक तहिना जीविकोपार्जनक। झंझारपुर-फुलपरास बिजली पहुँचने गामो-गाममे बिजलीक चर्च उठल। तेकर पछाइत जे पंचवर्षीय चुनाव भेल, तइमे गामक बिजलियो मुद्दा बनल। संयोग नीक रहल, गामक पच्छिम-उत्तर भागकेँ पकड़ैत, इसान कोणसँ दछिन मुहेँ घूमि पुबरिया सौंसे गामक सीमा पकड़ने काज आगू बढ़ल।

रामनगरक बगलेक गाममे बिजलीक इजोत हुअ लगल। केते चुनावमे लोक बिजलीक आश्वासनपर भोँट बिलहलक, मुदा गामक आँखि बिजलीक मुँह नइ देखलक।

नब्बे इस्वीक पछाइत गाममे बिजलीक सरकारी मंजूरी भेटल, ठीकेदारक माध्यमसँ कोटानुकूल पोल पहुँचल। गामक कोटा! एकेटा टोलमे गड़ैत-गड़ैत पोल सठि गेल। जे जोगीकेँ मन भाबए से वैद फरमाबए।

सरकारोक संग मजबूरी, बिजलीक उत्पादने नइ, तँ बिलहाएत की ऐहवक फड़। ई टोल, उ टोलक माने एक टोल, दोसर टोल तैसंग गामक सभ टोलक लोक झंझट उठौलक। लूटमे चरखा नफ्फा होइते अछि। बिजली गाममे पहुँचबे ने कएल, पहुँच गेल गामे झंझट।

नव शताब्दीक पदारपन भेल, गामक एक टोलमे बिजली पहुँच गेल जइमे पोल गड़ाएल छल। एते दिनक जे झंझट छल तइमे आरो सुधार भेल। मुदा झंझट लधले रहल, कनी-मनी अखनो अछिए। रामनगर-ले बीस साए पनरह इस्वी शुभ रहल, बिजली लगि गेल। अपनो

घरमे लगल।

पानि पीला पछाइत जखन बिजलीक स्विचपर आँगुर देलौं तँ बिजली नहि। पढ़ैले मन ओंघरनियाँ मारए लगल। मुदा बिजलीक इजोत नहि। गैस लाइटपर टॉर्च देलिऐ तँ बर्नल भंगठल बुझि पड़ल। बुझि पड़ल जे कोनो पार्ट छुटि कऽ खसि पड़ल छइ।

जहिना घर अन्हार गुप-गुप तहिना मनो अन्हार गुप-गुप भऽ गेल। ओही गुप-गुप अन्हारमे लालटेन मन पड़ल। रैकक तरमे लालटेन राखल। झोलाएल। गरदा-माटिसँ सौंसे देह भरल। चिन्हमे एबे ने करए जे कहियो यएह रोशनी दइ छल जइ रोशनाइसँ लिखै-पढ़ै छेलौं। रैकक तरसँ लालटेन निकालि, ओकरा कपड़ासँ झाड़ि-झूड़ि-पोछि-पाछि चिक्कन बनेलौं, मुदा टॉर्चक इजोतमे केतबो चिक्कनसँ साफ केलौं तैयो दोग-सान्हिमे गरदा लगल रहबे करइ। शीशा साफ करैत जखन लालटेनक बर्नल खोललौं तँ खजाना भरल तेलमे सूतक बाती भीजि सोगर बनि जरैले तैयार देखलौं। देखते मन खुशी भेल।

सलाइ सोझहेमे रहए, लालटेन नेसि रोशनीकेँ प्रणाम केलिऐन कि तीन जुगिया भाय नजैरक सोझमे आबि गेला। मुदा रोशनीक भकभकीमे झल-फल होइत रहने नीक जकाँ चीन्ह नइ सकलयैन।

लालटेन उठा किताबक रैक दिस बढ़ेलौं तँ थकियाएल किताबक थाकसँ कोन निकालि पढ़ब, से ताँइयेँ ने कऽ पबैत रही। एके थाकमे ऋृग्वेद, उपनिषद्, वेदान्त दर्शन, श्रीमद् भागवत, महाभारतक संग तुलसीकृत रामायणिक संग अध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायणिक संग वुद्धदेवक संग्रहावली, कबीरदासक बीजक, सूरदासक सूरसागर, जायसीक पद्मावतक संग विवेकानन्दक विचार सजल छल।

जँ पहिने विचारि नेने रहितौं जे फल्लाँ पोथी पढ़ब, तखन तँ अस्पतालक केहनो सम्पन्न लाश कक्षसँ नम्बर मिला सर्र दऽ निकालि

लइतौं, मुदा से भेल नहि। थाकि हारि असोथकित भऽ ओछाइनपर ओंघरा विचारऽ लगलौं, तँ बुझि पड़ल जे एतेकाल सँ अनेरे टप्पा-टोइया देलौं।

पोथी पढ़ब, मुदा कोन पोथी पढ़ब से विचार केने बिना ओझराएल छी। लगले मन पड़ि गेल- पोथी ने ही ज्ञान दिया है, पोथी ने गुमराह किया है...।

जखन पढ़ैले एतेकाल सँ मन ओंघरनियाँ दइए, तखन ओहन निर्दयी माइयो बनब नीक नहि जे बच्चा भूखसँ कनैत ओंघरनियाँ दिअए आ ओकरा दिस तकबो ने करिऐ।

लालटेनक इजोतक जे फकफकी रहै ओ टेमीक ऊपरक मोमड़ी जरैत काल तक फकफकाएल, मुदा जखन ओ अपन पुरान स्वरूपकेँ ज्योतिमे जरा लेलक, तखनसँ इजोतो फरिछा गेल। साफ, सुन्दर, सुहावन रोशनी अन्हारमे अपन रंग-रोशनाइ घोरि देलक। रोशनाइ घोराइते तीन जुगिया भाय अपन पोथी-पतरा नेने आगूमे आबि कहलैन-

“इजोतमे आँखि बन्न केने किए पड़ल छह, सुधीर?”

तीन जुगिया भाइक बात कानमे पड़िते आँखि सुरसुरा उठल। धड़फड़ा कऽ उठि भायकेँ गोड़ लागि ओछाइनपर बैसबैत अपनो बैसैत कहलयैन-

“भाय, आइ अहाँकेँ गंगा-कोसी धार जकाँ द्रुत गतिये बहैत देख मनमे असीम खुशी अछि।”

असीम खुशी सुनि, जहिना तराजूपर एक पलड़ामे वस्तु-जात आ दोसरमे बटिखाड़ा रखि तौलल जाइ छै तहिना तौलैत तीन जुगिया भाय बजला-

“सुधीर, आइ जेतए पहुँच गेल छी, तइसँ आगूओ देखब अछि आ पाछूओ केँ मन राखब अछि, जँ से नइ रखि चलब आ कहबै जे बेटा

परदेश गेने बापकेँ बिसैर गेल, से कहने थोड़बे हएत।”

तीन जुगिया भाइक विचार सुनि मन ठमकल। मुदा तेहेन ताड़-खजूर जकाँ विषयक जड़ि रोपि देलखिन जे बारह बर्खे जड़िये बन्हाएत। फरीच होइमे केते समैये रहल अछि जे ओछाइन धेने रहब। अपनो धड़फड़ाइत आ भाइयोकेँ धड़फड़बैत कहलयैन-

“भाय, जखन अपन मनक बेथा अपन रोशनीक रोशनाइ घोरि-लिखि कहऽ चाहै छी, तँ कहिये दिअ। मुदा सूर्योदयसँ पहिने अपन विचार समेट लेबए पड़त।”

जेना व्याकरणक संक्षेपण तीन जुगिया भायकेँ ठोरेपर रहैन तहिना बजला-

“तोरा अबूह बुझि पड़ै छह, फोरनसँ पेसतर हमर विचार उसैर जाएत।”

भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे अपनो चुकने ने कहीं असले चुइक जाए। विचारकेँ सम्हारि कहलयैन-

“भाय, उपयोगीकेँ तेना फड़िया कहियौ जे अन्हारोमे रस्ता हेराए नहि। एकर माने ई नइ जे भूतकेँ भुतिया भूमिके छोड़ि दिऐ।”

हमर बात तीन जुगिया भायकेँ नीक लगलैन। बजला-

“सुधीर, बीतल समैयक संग बीतल जिनगी बीतल, एकर माने ई करवनो ने भेल जे ओ जिनगीए ने छल। जीवनक सभ किछु रहितो जिनगी समटल-बान्हल छल, तँए..?”

भाइक अलंकारिक शैली सुनि मनमे भेल विचारैमे जँ कनीयोँ तल-बिचल भेल, तखन तँ अनेरे देवतासँ दानव भऽ जाएत आ बिच्चेमे मानव हेरा जाएत। जखन मानवे हेरा जाएत तखन जाएब केम्हर! कहलयैन-

“भाय, एना जँ एकेटा शब्दकेँ बेर-बेर कहबै तँ हम भोथिया

जाएब। तँए कनी...।”

हमर बात सुनिते भाय मुस्की भरलैन। मुस्कीक संग मुहसँ निकललैन-

“सुधीर, भूमिकामे बेसी नइ कहबह, एतबे बुझि लएह जे शक्तिक रूपमे आगि अबैसँ पहिने हमर-तोहर पूर्वज ऐ धरतीपर स्वतंत्र रूपे विचरण करै छला, फल-फूल साग-पात सभ खाइ छला। दिन-रातिक बीच जीबैत एला, आगि एला पछाइत शक्तिक रूपमे उपयोग करैत आइ हम बिजलीक रोशनीमे पहुँच गेल छी।”

हूँहकारी भरैत कहलयैन-

“अइमे के काट-खोंट करत?”

जेना तीन जुगिया भायकेँ सह भेटलैन तहिना सम्हारि बजला-

“सुधीर, आगूक रोशनीक चर्च करैसँ पहिने एकटा मन रखिहह।”

मनमे भेल जे बजला किछु ने, तँ एकटा की भेल। पचीस-पचासमे ने एकटा, दूटा आकि तीनटा हएत आ जेतए किछु ने रहत तेतए एकटा की भेल? पुछलयैन-

“भाय, एकटा की कहलिऐ? मन रखैले कहलौं मुदा एकटा तँ दूटा होइए। एकटा होइए एकटा मिसिया आ दोसर होइए एक नम्मर काज, विचार, ज्ञान, रस्ता, जिनगी। से कनी बेरा कऽ पहिने कहियौ, तखन मन रखै जोकर जे एकटा हएत तेकरा राखब, जे नइ रखै जोकर हएत तेकरा एक नम्मरमे नइ राखब।”

भाइयोकेँ जेना हमर विचार नीक लगलैन। बजला-

“अपनो विचार सदिकाल यएह रहैए जे कोनो लाइ-लपटाइमे नइ रही आ ने केकरो लाइ-लपटाइ दिस ठेलिऐ।”

हूँहकारी भरैत कहलयैन-

"एहने चाहै छी।"

पहिने जेना सेरिया कऽ साँस खिंच लेलैन तहिना एके सूरे बजला-

"सुधीर, ठनका-पाथर भलें मनुखसँ पहिने जनम लऽ लेने हुअए, मुदा जहियासँ मनुख जनम लेलक तहियासँ कहियो ओकरा गुदानलक नहि।"

मनमे भेल जे बीचमे ई की कहि देलैन। सालक-साल देखै छी जे ठनकासँ केते लोक मरैए, पानिमे डुमि कऽ से मारि लोक मरैए आ गुदानलक केना नइ? फेर भेल जे भाय किछु छैथ तँ तीन जुगिया छैथ, अपने मने अबिसवासो करबकैं नीक नहियेँ कहल जाएत, कहलयैन-

"भाय, कनी नीक जकाँ विचारक खोंइचा छोड़ा कहबै तखन ने एक जुगियोकेँ मन रहतैन जे इलायचीक माने फोकले इलायची नहि, दनोबला इलायची होइते छइ। भलें संग-संग रहने ओकरो देह-हाथ ओहिना किए ने होउ।"

भायकेँ जेना नीक लगलैन तहिना बजला-

"बौआ सुधीर, किरिणो फुटैपर आबि गेल आ गपक मुँह- नाडेर छुटले रहि गेल, तँए नीक हएत... ।"

'नीक'क आगू की बजितैथ से तँ ओ जानैथ मुदा हमरो मन औगुता कऽ धड़फड़ा गेल तँए बिच्चेमे टोनी बना टोनि देलिऐन-

"भाय, ठनका-पाथरबला..?"

हुनको जेना मनमे नचिते रहैन तहिना बतीसो मोती छिटकबैत बजला-

"बौआ, केतबो ठनका-पाथर किए ने खसल-पड़ल मुदा ई बात झूठ छै जे हमर वंश जहियासँ धरतीपर आएल तहियासँ जीबित अछि।"

भाइक बात सुनि मनमे छह-पाँच उठऽ लगल जइसँ आँखियो आ

कानो हुनका दिससँ ससैर अपना दिस अबऽ लगल। जे भाय बुझि गेला। बिच्चेमे टोनीकेँ छिलैत बजला-

"बौआ, जँ वंश जीबित नइ रहैत तँ हमर जनम केना भेल। तँए हम जीबित वंशक जीबित मनुख छी।"

पूबमे सूर्यक लाली अन्हारमे बिजलीक इजोत जकाँ पसरऽ लगल। भाय बजला-

"बिजली बहुत पैघ सम्पैत मनुखक छी, तँए जे जेते उत्पादित पूजी बना उपयोग करता, हुनका ओते नीक हेतैन आ जे जेहेन करता से तेहेन पौता।"

❑ **साभार : मधुमाछी**

आश्रम नहि सोभाव बदली

एकटा युवक उद्धत सोभावक छल। बात-बातमे खिसिया कऽ आगि-अंगोड़ा भऽ जाइत। जौं कियो बुझबै-सुझबै छेलै तँ ओ घर छोड़ि संयासी बनैक धमकी दिअ लगइ। युवकसँ परिवारक सभ परेशान रहैत। एक दिन पिता खिसिया कऽ संयासी बनैले कहि देलक।

घरसँ किछुए दूर हटि संयासीक आश्रम छेलइ। जे ओकरा बुझल छेलइ। घरसँ निकैल युवक सोझे संयासीक आश्रम पहुँच गेल। आश्रमक संचालक ओइ युवकक उदण्डतासँ परिचित छला। युवककेँ आश्रममे पहुँचते, संचालक रस्तापर आनै दुआरे पुचकारि कऽ लगमे बैसा विचार पुछलखिन। ओ युवक संयासक दीक्षा लइक विचार व्यक्त केलक। दोसर दिन दीक्षा दइक आश्वासन संचालक दऽ देलखिन।

दीक्षाक विधानमे पहिल कर्म छल गोसाँइ उगैसँ पहिने समीपक धारमे नहा कऽ एनाइ। आलसी प्रवृत्ति आ जाड़सँ डरैबला युवककेँ ई आदेश खूब अखड़लै। मुदा करैत की? निअम पालन तँ करए पड़तै।

कपड़ाकेँ देवालक खुट्टीपर टांगि युवक नहाइले गेल। जखन युवक नहाइले गेल आकि संचालक कपड़ाकेँ चिड़ी-चोंत कऽ देलकै। नहा कऽ थरथराइत युवक आएल तँ देखलक। तामसे आरो थरथराए लगल। मुदा करैत की?

दीक्षाक मुहूर्त्त संचालक सौंझुका बनौलक। ताधैर मात्र किछु फल-फलहरी खेबाक छेलइ। तँए ओइ युवक-ले नून मिलौल करैला परोसि कऽ थारीमे देल गेलइ। एक तँ करैला ओहिना तीत दोसर छुच्छे। कण्ठसँ निच्चाँ युवककेँ उतरबे ने करए।

भोरमे उठब, जाड़मे नहाएब, फाटल-चीटल कपड़ा पहिरब आ तैपरसँ तीत करैला खेनाइ! युवक खिन्न हुअ लगल। संचालक सभ बुझैथ। युवककेँ बजा संचालक कहलखिन-

“संयासी बनब कोनो खेल नै छिऐ। ऐ दिशामे बढ़निहारकेँ डेग-डेगपर मनकेँ मारए पड़ै छइ। परिस्थितिसँ ताल-मेल बैसा, संयम बरैत, अनुशासनक पालन करए पड़ै छइ। तखन कियो संयासी बनैए।”

भरि दिन युवक अपन प्रस्तावपर सोचैत-विचारैत रहल। तेसर पहर अबैत-अबैत ओ पुनः घुमि कऽ घर आबि गेल। संयम साधना आ मनोनिग्रहक नाउँए तँ संयास छी। जे घरोपर रहि लोक पालन कऽ सकैए।

सोभाव बदलने वातावरणो बदैल जाइ छइ।

❑ **साभार : तरेगन**

मायराम

अमावस्याक राति, बारहसँ ऊपर भऽ गेल छल मुदा एक नै बाजल रहइ। डन्डी-तराजू माथसँ निच्चाँ उतैर गेल छल। सन-सन करैत अन्हार...।

नित्य नअ बजेमे निन्न पड़ैवाली मायरामकेँ आइ आँखिक नीन निपत्ता छैन, रातिक एक बजैबला अछि।

कछमछ करैत मायराम ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत समय बीता रहल छैथ, अकैछ कऽ केबाड़ खोलि बाहर निकलली तँ काजर घोराएल रातिमे अपनो हाथ-पएर नै सुझि रहल छैन। जहिना करिछौंह दुनियाँकेँ आँखिसँ देखब कठिन होइत तहिना दसो दुआरि बन्न, मन खलियाएल बुझि पड़लैन। पुन: घुमि कऽ ओछाइनपर आबि ओंघरा गेली! दिन-रातिक बोध-विहीन मायरामक मन तड़ैप उठलैन-

“नैहर!”

पहिल सन्तान होइते सुदामा (मायराम) बाइसे बर्खमे विधवा भऽ गेली। गत्र-गत्रसँ जुआनी, फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ छिटकैत रहैन। ओना, सरकारी रजिष्टरमे जुआन भऽ गेल छेली मुदा बत्तीसीक अन्तिम दाना नै उगल रहैन।

साँपक बीखसँ पतिक करियाएल देह देख अपनो मरनासन भऽ गेली। पथराएल आँखि टक-टक तकैत मुदा अन्हारसँ अन्हराएल। बगलमे डेढ़ बर्खक बेटा उठैत-खसैत अँगना-घर घुमैत-फिरैत। तैबीच हहाएल-फुहाएल शंकरदेव आँखिमे यमुनाक धार नेने पहुँचला। बहिन-बहनोइक रूप देख शंकरदेव अपन आँखिक नोर पोछि भागिनकेँ उठा छाती सटा सुदामाकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, होश करू। दुनियाँक यएह खेल छिऐ। अहीं जकाँ नानियोंकेँ भेल रहैन। मुदा आइ केहेन भरल-पूरल परिवार छैन। एक-ने-एक दिन, ओहिना अहूँक परिवार दुनियाँक फुलवाड़ीमे फुलाएत।"

शंकरदेवक बात सुनि सुदामाक आँखि तँ खुजलैन मुदा बकार नइ फुटलैन। नर-नारीक करेजो तँ दू धारक दू माटि सदृश होइत अछि। बहनोइक पार्थिव शरीरकेँ जरबैक ओरियानमे आँगनसँ निकैल शंकरदेव समाज दिस बढ़ला।

पनरहम दिन बहिनकेँ संग नेने अपना गाम विदा भेला। गामक सीमानपर अबिते कन्नारोहट शुरू भेल। बच्चासँ बुढ़ धरि सुदामाकेँ छाती लगबए आगू बढ़ल।

वेचारी निसहाय भेल ओहिना पड़ल छेली जहिना चोंगरा परहक घर खसल-पड़ल रहैए। मुदा ताधैर गामक धरोहिक ऐगला अंक पहुँच गेल। एक्के-दुइए ढेरो छाती सुदामाक छातीमे सटि, चारू दिससँ पकैड़ टोल दिस बढ़ल। सुदामाक मनमे उठलैन जँ अपने कानब तँ समाजक कानब केना सुनबै? से नइ तँ समाजेक कानब सुनी जे आगूक जिनगी केना जीब...।

जहिना बीच आँगनमे माए ओंघरनियाँ दैत तहिना दरबज्जापर पिता भुइयेँमे पेटकान देने! अपन-अपन अथाह समुद्रमे सभ डुमल। के केकर नोर पोछत। दुनू पएर धोइ भतीजी गाराजोरी केने आँगन बढ़ली।

दुरुखापर पएर दैतै सुदामाक रूदनसँ बहराएल-

"हे मइया..!"

जहिना धड़सँ कटल अंग छटपटाइत तहिना माइक मन छटपटाइत रहैन। छटपटाइत कामिनीक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलैन। मुदा कोनो प्रश्नक सोझ रस्ता नै देख काँटक ओझरी जकाँ मन ओझराए लगलैन। एक ओझरी छोड़बैथ आकि बिच्चेमे दोसर लगि जाइन। की आगूक जिनगी लेल बेटीकेँ दोसर बिआह कऽ देब? मुदा फेर मन उनैट जानि जे जिनगी लेल सहचर तँ आवश्यक अछि!

की सहचर लेल पति आवश्यक अछि? मुदा जेते असानीसँ गुंथी खोलए चाहैथ ओते असानीसँ खुजबे ने करैन। तैबीच दोसर प्रश्न अकुँरि गेलैन- बेटीक संग नातियो अछि। जँ बेटी दोसर घरकेँ अपन घर बनौत तँ नातिक..? पुत्र हत्याक पाप केकर कपार चढ़त? की कुत्ता जकाँ पछिलग्गू एहेन सुकुमार फूलकेँ बना देब? अखन ओ दूधमुँह अछि, की बुझत? की अपन भूमि आ आनक भूमिक मर्जादा एक्के रंग होइत? की दोसरो घरमे ओहने ममता माइक भेटतै? मनुक्खेक क्रिया-कलाप ने कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैए।

कामिनीक घुरियाएल मनकेँ राह भेटलैन। सुफल नारी जिनगी तँ वएह ने छी जेकरा आँचरक लाल मातृत्व प्रदान करैए। जइसँ वीणाक झंकृत मधुर स्वर हृदैकेँ कम्पित करैत रहै छइ। से तँ भेटिये गेल छइ। मुदा जहिना ठनकैत अकाससँ ठनका खसैत तहिना मनमे खसलैन-

"मुदा समाज?"

की मनुख-पोनगैक स्थिति समाजमे जीवित अछि?

सुदामाक सम्पन्न पितृ परिवार। अदौसँ श्रम-संस्कृतिक बीच पुष्पित-पल्लवित परिवार। जइसँ रग-रगमे समाएल अपन संस्कृति। ओना, सम्पन्नताक सीमा असीमित अछि, मुदा परिवारक आँट-पेट देख

अपन जिनगीक स्तर बना चलब सम्पन्नताक अनेको कारणमे एक प्रमुख छी। तँए सम्पन्न परिवार। ओना, आर्थिक दृष्टिए सुदामाक बिआह दब परिवारमे भेल छेलैन मुदा बेवहारिक दृष्टिए बरबैरमे छेलैन। कम रहितो गोरहा खेत छेलैन जइसँ खाइ-पीबैक कोताही नहि। किछु आगूओ बढ़ि ससरैत। सालक तेरहम मासमे घरक कोठी-भरली झाड़ि इजोरिया दुतियासँ भागवत कथाक संग हरिवंश कथा सुनि, भोज-भनडारा कऽ सामा-चकेबा जकाँ आगू दिस बढ़ैत।

बेटाक पालन आ धर्मक काज देख अपनो गाम आ चौबगलियो गामक लोक सुदामक नाओं 'मायराम' रखि देलकैन। बच्चासँ बुढ़ धरि 'मायराम' कहए लगलैन।

रविशंकरक परिवारमे चूल्हि नै पजरल। जखन सुदामा आएल तखन जे कन्नारोहट शुरू भेल, से भरि दिन होइते रहि गेल। कखनो बेसी तँ कखनो कम। चूल्हि नै पजरने टोल-पड़ोसक परिवारसँ थारी-थारी भात, दालि एतेक आएल जे राति धरि चलैत रहल।

सायंकाल रविशंकर आँगनक ओसरपर बैस, सुदामाक भावी जिनगी लेल पत्नियोँ आ बेटो-पुतोहुकेँ बैसा विचार करए लगला।

विचारोत्तर निर्णय भेल जे काल्हिए शंकरदेव सुदामाक सासुर जा खेती गिरहस्ती ताधैर सम्हारैथ जाधैर सुदामाक बेटा जुआन नै भऽ जाएत। तैसंग ईहो विचार भेल जे छह मास सासुर आ छह मास नैहरमे सुदामा रहत।

अठारह बर्ख पुरिते राहुलक बिआह भऽ गेल। नव परिवार बनि ठाढ़ भेल। शंकरदेव अपना ऐठाम चलि एला।

तीन सालक पछाइत रविशंकर आ पाँच सालक पछाइत कामिनी मरि गेली। मुदा दुनू ठामक परिवारमे कोनो कमी नै रहल। हवाइ-जहाज जकाँ तेज गतिए तँ नहि, मुदा टायरगाड़ी सदृश असथिर सवारी जकाँ

परिवार आगू मुहेँ ससरए लगल।

मायरामक प्रति समाजक नजरिया सेहो बदलल। समाजक आन विधवा जकाँ नहि, जे कियो अशुभ बुझि कनछी कटैत तँ कियो पशुवत बेवहार लेल मरड़ाइत रहैत। बल्कि तीर्थस्थान जकाँ मायरामक परिवार बनि गेलैन। 'भागवत कथा'क संग 'हरिवंश कथा' आ भोज-भनडारा कऽ समाजकेँ खुआ सालक विसर्जन साले-साल मायराम करए लगली।

पाँच बर्खक पछाइत मायरामक भरल-पुरल नैहर कोसीक कटनियासँ धार बनि गेल। गामक बीचो-बीच सनमुख धार बहए लगल।

घटनो अजीब घटल। चारि बजे करीब बाढ़िक हल्ला गाममे भेल। किरिण डुमैत-डुमैत धारक कटनिया शुरू भेल। गामक सभ बाध नदिया गेल। उत्तर-सँ-दच्छिन मुहेँ बहए लगल। बाढ़िक बिकराल रूप देख गामक लोक माल-जाल, बक्सा-पेटीक संग ऊँचगर-ऊँचगर जमीनपर पहुँचल। नट-बक्खो जकाँ नव बास बनि गेल।

बाढ़िक गुंगुआहैट सुनि-सुनि लोक सभ किछु बिसैर अपन-अपन परान बँचबैक गड़ लगबए लगल। चारू कात बाढ़ि पसरल। जइसँ ईहो डर होइत जे जँ कहीं अहूपर पानि चढ़त तखन की हएत? अन्हरिया राति, हाथो-हाथ नै सुझैत। जीवन-मरनक मचकीपर सभ झूलए लगल। सबहक भूख-पियास मेटा गेल। जहिना दुखित नव बिआएल गाए-महींस बेथित आँखिए बच्चाकेँ देखैत तहिना सभ माए-बापक आँखि बाल-बच्चापर। मुदा मनुख तँ मनुख छी, जानवर तँ छी नहि जे हरियर घास देख बच्चो आगूक लूझि कऽ खा लइए। एना मनुख थोड़े करत। बाल-बच्चा लेल तँ मनुख अपन खूनकेँ पानि बनबैत, अपन सुआदकेँ छोलनी धिपा दगैत, अपन मनोरथ बच्चामे देखैए। अपन जिनगीकेँ बलिवेदीमे आहूत दइए।

भोरहरबामे हल्ला भेल जे बीस नमरी पुल कटि कऽ दहा गेल!

पुलक समाचार सुनि सबहक छाती डोलए लगल। पूव दिसक रस्ता बन्न भऽ गेल।

किछुए कालक पछाइत फेर हल्ला भेल जे बेटा संग रोगही पानिमे डुमि गेल। किछु काल धरि तँ हल्लामे बाते नै फुटैत मुदा तोड़ मारि हल्लामे विहियाति-विहियाति समाचार विहिया गेल। भाँसि कऽ केते दूर गेल हएत तेकर ठेकान नहि, तँए कियो आगू बढ़ैक हूबे ने केलक। जहिना एक टाँग टुटने गनगुआरि नै नेंगराइत तहिना एक गोरेकेँ मुइने समाज थोड़े नेंगराएत। एना सभ दिन होइत एलै आ आगूओ होइत रहतै...। हल्ला शान्त होइते शंकरदेव पत्नीकेँ कहलखिन-

"आब जान नै बँचत!"

"एते अन्हारमे केतए जाएब। भने ऐठाम छी।"

पत्नीक बात सुनि डेराइत शंकरदेवक मुहसँ निकलल-

"जँ अहूपर बाढ़ि चढ़ि जाएत?"

"सभ तूर संगे कोसीमे डुमि जाएब। कियो बँचब तखन ने दुख हएत। जँ दुख केनिहारे नै रहब तँ दुख केकरा हएत।"

पौरुकी घुटकल। आन-आन चिड़ै सुतले रहए। पौरुकीक अवाज सुनि शंकरदेवक मनमे दुभिक नव मुड़ी जकाँ, नव चेतना जगलैन। बजला-

"भिनसर होइमे देरी नै अछि। जँए एतेकाल तँए कनीकाल आरो। दिन-देखार तँ असगरो लोक अमेरिका चलि जाइए। अपना सभ तँ बाधक थोड़े रस्ता काटब।"

किरिण उगैसँ पहिने ऊँचकापर पानि चढ़ए लगल। चढ़ैत पानि देख हरविर्रो भेल। गाए-महींस, बक्सा-पेटी छोड़ि सभ अपन जान बँचबैक गड़ लगबए लगल। जहिना वैरागी दुनियाँकेँ मायाजाल मानि, छोड़ि, आत्म चिन्तनमे लगि जाइत तहिना माल-असबाव छोड़ि अपन-अपन

जान बँचाएब सोचए लगल। तही बीच बाँसक झोंझमे मैना सभमे तेना झौहैर उठल जेना केकरो वोनबिलाड़ि पकैड़ नेने होइ।

पूब दिस फीक्का गुलावी जकाँ अकासमे पसरए लगल। मुदा बिलटैत जिनगी आ डुमैत सम्पैतक सोग एक-एक बेकतीक मनक अन्हारकेँ आरो बढ़बैत रहइ। सुखल जमीनपर पहुँचते छोट-छीन आशा शंकरदेवक मनमे जगलैन। मुदा चारू बच्चो आ पत्नियोंक मनमे दुधाएल चाटल दानाक खखरी जकाँ बेर-बेर शंका खिहारैत जे हो-न-हो, फेर ने कहीं आगूए-सँ बाढ़ि चलि आबए...। तैबीच मिरमिराइत पत्नी शंकरदेवक मुँह दिस तकैत बजली- "एते लोकक गाममे एक्कोटा संगी नै देख रहल छी!"

"सभ अपने जान बँचबै पाछू अछि तखन के केकरा देखत।"

"जाबे लोक, भरल-पूरल रहैए ताबे दुनियाँ हरियर बुझि पड़ै छइ। मुदा...।"

"हँ, से तँ होइते छइ। मुदा...।"

"हँ, ईहो होइ छइ। अखन माए जीबैए, केतए वौआएब। बच्चो सबहक मात्रिके भेल, अपनो नैहरे भेल आ अहूँक सासुरे।"

पत्नीक बात सुनि शंकरदेव गुम भऽ गेला। मनमे चूल्हिपर खौलैत पानि जकाँ विचार तर-ऊपर हुअ लगलैन। बजला-

"कहलौं तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सासुरसँ नीक बहिन ऐठाम हएत।"

"केना?"

"जइ दिन वेचारीक ऊपर विपैत आएल छेलै तइ दिन यएह देह अपन घर-परिवार छोड़ि ठाढ़ भेल छेलइ। आइ की हमरे गाम-घर मेटा रहल अछि आकि ओकरो नैहर।"

"अहाँकेँ जे विचार हुअए।"

“विचारे नहि, विपैतमे लोकक बुधि हेरा जाइ छइ। जइसँ नीक-अधलाक विचार नै कऽ पबैए। मुदा अहीं कहूँ जे सासुरमे कान्हपर कोदारि लऽ कऽ खेत-पथार जाएब, से केहेन हएत? अपन जे दुरगैत हएत से तँ हेबे करत, मुदा दुनू परिवारक की गति हएत?”

बाढ़िक समाचार इलाकामे पसैर गेल। मायरामक कानमे सेहो पड़लैन। भाय-भौजाइक आशा-बाट तकैत मायराम बेटाकेँ संग केने आगू बढ़ली। मुदा किछु दूर बढ़लापर सोगसँ पथराएल पएर उठबे ने करैन। बाटक बगलक गाछक निच्चाँमे बैस बेटाकेँ कहलखिन-

“राहुल, पएर तँ उठबे ने करैए। केना आगू जाएब? ता तूँ आगू बढ़ि कऽ देखहक।”

छबो तूर शंकरदेव ऐ आशासँ झटकल अबैत जे जेते जल्दी पहुँचब ओते जल्दी बच्चा सभकेँ अन्न-पानिसँ भेँट हेतइ। रतुको सभ भुखाएले अछि। तैबीच राहुलक नजैर मामपर आ मामक नजैर भागिनपर पड़ल। नजैर पड़िते राहुल दौड़ कऽ ठाढ़े मामाकेँ गोड़ लागि मामीक कोराक बच्चाकेँ अपना कोरामे लैत बाजल-

“माइयो अबैए, मुदा डेगे ने उठै छेलइ। आगूमे बैसल अछि।”

राहुलक बात सुनि मामी बच्चा सभकेँ कहलखिन-

“भैयाकेँ गोड़ लगहुन।”

बच्चाकेँ कोरामे नेने आगू-आगू राहुल आ पाछू-पाछू सभ कियो विदा भेला। सभसँ पाछू शंकरदेव अपने। मन पड़लैन रौतुका दृश्य। केना छनेमे छनाक् भऽ गेल! जिनगी भरिक जोड़ियाएल घरक वस्तु-जात आगि लगने आकि बाढ़ि एने केना लगले नास भऽ जाइ छइ! मान-प्रतिष्ठा, गुण-अवगुण, केना छनेमे केतए-सँ-केतए चलि जाइ छइ! ठीके लोक बजैए जे दिन धराबे तीन नाम। अपने छी जे एक दिन बहिनक रक्षक बनि ऐ गाममे छेलौं आ आइ..! एक दिन गाड़ीपर नाह आ एक दिन

नाहपर गाड़ी! माटि-पानिक खेल छी। गंगा-यमुनाक बीच केतौ माटियो छै आकि खाली पानियेँ-पानि..!

किछु फरिक्केसँ भाय-भौजाइकेँ अबैत देख मायरामक मन ओइ धरतीपर पहुँच गेलैन जे सात समुद्रक बीच अछि। एक ओद्रक रहितो एक भिखारी दोसर राजा! मनमे उठलैन- परोपट्टाक लोक सिनेहसँ 'मायराम' कहै छैथ मुदा भैयाकेँ की कहतैन? की भैयाक कर्म बिगड़ल छैन? एक परिवारक बँचौल कर्म छैन। चान, सुरूज, धरती, ग्रह-नक्षत्र इत्यादि तँ अपना गतिए करोड़ो बर्खसँ नियमित चलि रहल अछि आ चलैत रहत, की मनुखोक गति ओहन भऽ सकैए, आकि चाने-सुरूज जकाँ मनुखोक चलैक एकबटीए अछि? ब्रह्मक अंश जीव रहितो की फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ नै अछि? जेतए जेहेन जलवायु तेतए तेहेन उपजा-वारी! जँ केतौ वायु परानक रूपमे घट-घटकेँ आगू बढ़ैक प्रेरणा दैतो अछि, तँ वएह विषाक्त बनि परान नै लैत अछि?

गोलाक चोटसँ जहिना पोखैरक पानिमे हिलकोर उठैत आ आस्ते-आस्ते असथिर होइत चिक्कन आँगन जकाँ सहीट बनि जाइत तहिना मायरामक मन सहीट हुअ लगलैन। मुदा लगले नजैर उड़ि भतीजीपर गेलैन। भतीजीपर पहुँचते मन तरपए लगलैन। बाप रे बाप! एहेन दुरकालमे भैया केना इज्जत बँचौता? अपनो लग जमा किछु तँ नहियेँ अछि। साले-साल हिसाब फरिया लइ छी। हे भगवान! जँ केकरो दुखे दइ छिऐ आकि सुखे दइ छिऐ तँ तुलसी पात आकि दुभिक मुड़ी जकाँ खोंटि-खोंटि किए ने दइ छिऐ जे गुलाब-गेन्दा तोड़िए कऽ दऽ दइ छिऐ? लगले नजैर मायराम छिप्पा जकाँ छिहैल अपन मातृत्वपर पहुँच गेलैन। केना बेटाकेँ पोसि-पालि ठाढ़ केलौं आ ई सभ...। लुधकी लागल एकटा गाछ फड़बे करत तइसँ गामक सबहक मुँहमे थोड़े जाएत। जेते मनुख अछि ओकरा तँ धरतीसँ अकास धरि चाहिए, तखन ने जीबैक आजादी भेटतै..? मुदा लगले जहिना पानि ठंढेने बर्फक रूप लिअ लगैत तहिना

दूधसँ उपजैत दही जकाँ मायरामक मन सकताए लगलैन। साँस सुषुमा गेलैन। मनमे खौललैन- नैहर मेटा गेल तँए कि सासुरो मेटा गेल? जहिना भैया नैहरमे भैया छला तहिना अहूठाम भैया रहता। भगवान अपन कोखि अगते लऽ लेलैन तँए की भतीजीकेँ अपन कोखिक नै बुझब? ऐठाम जे अछि ओ की भैयाक नइ छिऐन? खेत-पथार, घर-दुआरि चलि गेलैन आकि हाथो-पएर चलि गेलैन? गुमे-गुम, जहिना मृत्युक अवसरपर गुम भऽ स्मरण कऽ निराकरणक बाट जोहल जाइत तहिना सभ कियो घरपर पहुँचला। ताधैर पुतोहु माने रोहितक पत्नी हाँइ-हाँइ कऽ खिच्चैड़ आ अल्लूक सन्ना बना, बाट तकैत रहथिन।

सबहक आँखि सभ दिस हुलैक-हुलैक वौआइत रहैन। तैबीच राहुलक कोरक छोटका बच्चा, घर देखते, बाजल-

“दीदी, बड़ भूख लगल अछि?”

बच्चाक बात सुनि मायरामक भक् टुटलैन। अनासुरती मन पड़लैन बटोहीकेँ जहिना इनारपर ठाढ़े-ठाढ़ पानि पिऔल जाइत तहिना ने अखन ईहो सभ छैथ। नहाय-धोइमे अनेरे देरी किए लगाएब। बजली-

“कनियाँ, भरि रातिक थाकल-ठेहियाएल सभ छैथ, तँए पहिने किछु खुआ कऽ अराम करए दियौन। गप-सप्प पछाइतो हेतइ। भोजन बादेक अराम तँ सोग कम करैक उपाय छी।”

❑ **साभार : सतभैंया पोखैर**

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह

गंगा नहेलौं

बकठाँइ

गुलेती दास

खर्च

डॉक्टर हेमन्त

मनुखक मूल्य

तीन जुगिया भाय

आश्रम नहि सोभाव बदली

मायराम

शुभचिन्तक

विधवा बिआह

वैष्णवी भगवती

प्रेमी

शंका

मुइलो बिसेबैन

प्रतिभा

केतौ नै

हमर कोन दोख

असगरे

डीहक बटबारा

मूलधन

छूआ

लफ साग

नहरकन्हा

अपन सन मुँह

पाप आ पुण्य

चोरक चोरबती

मातृभूमि

कटा-कटी

हरदीक हरदा

बेरपर

झगड़ाउ-झोटैला

फॉगु

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर

पतझाड़

धरम काँट

तिलासंक्रान्तिक लाइ

कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्गूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9 789388 421683